चतुर तेंदुए से सामना

श्रीकांत इंगलहलीकर

सिंहगढ़ से मेरा नाता बचपन से रहा है। साइकिल सीखने के बाद पहला चक्कर सिंहगढ़ का ही तो लगाया था। उस दिन से लेकर आज तक सैकड़ों बार सिंहगढ़ गया। कात्रज, आतकरवाड़ी, तानाजी कड़ा इन सभी की ओर से गढ़ चढ़ चुका हूँ। अब गाड़ी से आधे घण्टे में ही पहुँच जाता हूँ। एक बार तो घर से पैदल ही निकल पड़ा था, पूरे 6 घण्टे लगे थे। वारकरी समुदाय के लोगों के साथ भी गुरुवार के दिन कई बार गया हूँ। सिंहगढ़ का इतिहास मज़ेदार है। लेकिन मुझे सिंहगढ़ के प्राकृतिक सौंदर्य ने ही ज़्यादा लुभाया।

एक बार विजयादशमी की सुबह मैं अपना स्कूटर स्टैण्ड पर लगा रहा था। तभी शंकर पढेर ने दौड़ते हुए आकर एक खबर दी, "तेंदुआ बछिया उठा ले गया।" बाईं ओर के पहाड़ों की तरफ उँगली से इशारा करते हुए शंकर ने कहा, "वहीं होगा अभी।"

"वो क्या, तलहटी में से घसीटते हुए ले गया।" बाईं तरफ के भात-खाचर की तलहटी की ऊँची घास अस्त-व्यस्त हो गई थी। मैंने तत्काल दूरबीन निकालकर पहाड़ की तरफ देखा। वहाँ की भी घास आड़ी पड़ी हुई थी। और उस पर एक रास्ता बना दिख रहा था। बछिया को तेंदुआ कौन-सी दिशा में ले गया है यह समझ में नहीं आ रहा था। मैंने शंकर से कहा, "चल देखते हैं कि तेंदुआ दिखता है क्या।" शंकर ने गर्दन हिलाते हुए साफ इनकार कर दिया, "आप ही जाओ। कोई भी नहीं आएगा आपके साथ।"

एक घण्टा ही बीता था, इसलिए उम्मीद थी कि अभी तक तेंदुए ने शिकार को खत्म नहीं किया होगा। यानी अगर अपन हिम्मत करें तो तेंदुआ दिख सकता है। पूना, अपने घर जाकर और किसी को साथ लाऊँ तो आने-जाने में ही दो घण्टे बीत जाएँगे। तब तक तेंदुआ भी आ जाएगा... ऐसे कई विचार मन में आए। तय किया कि दूरबीन से शिकार और शिकारी को पास से देखेंगे। तेंदुए के पाँवों के निशान ढूँढने से पता चलेगा कि वह कहाँ होगा। इस बात की तसल्ली थी कि तेंदुए को चूँकि शिकार मिल चुका है इसलिए शायद वह मुझ पर हमला नहीं करेगा।

पहाड़ की चढ़ाई खत्म होने तक सिर्फ आड़ी पड़ी घास ही दिख रही थी। ज़मीन गीली थी फिर भी तेंदुए के पंजों के निशान नहीं दिख रहे थे। तेंदुआ शिकार को पीछे की तरफ से घसीटते हुए ले गया था। घसीटने के निशानों का पीछा करते-करते मैं पहाड़ के सपाट इलाके पर पहुँच गया था। साँस रोके हुए दूरबीन से देखा। सामने की सपाट घास एक पेड़ के नीचे आकर अस्त-व्यस्त हो गई थी। वहाँ से आगे तेंदुए की हलचल का कोई निशान नज़र नहीं आ रहा था। तेंदुआ और शिकार, दोनों ही गायब थे। वहीं-कहीं दुबककर बैठे तेंदुए के ख्याल से ही मुझे कँपकपी आ गई। उसका पीछा करने का कोई मतलब नहीं था। इसलिए मैं दबे पाँव दाईं तरफ मुड़ा। और फिर गोल घूमकर घास में बने हुए तेंदुए के रास्ते पर आ गया। एक बार फिर दूरबीन से "उस" पेड़ के नीचे देखा। तेंदुआ और शिकार, दोनों ही नहीं दिख रहे थे। तेंदुआ कहाँ गायब हो गया? उसने शिकार कहाँ छुपाया होगा? ... सोचते हुए मैं फिर से घूम कर उसी पेड़ की दूसरी तरफ पहुँच गया। एक बार फिर मैंने दूरबीन उस पेड़ पर टिका दी। अचानक पेड़ के तने से खड़ी स्थिति में टिकाकर रखी बछिया दिखी। शिकार दिखते ही मेरी आँखें चमक गईं। साथ ही तेंदुए की चालाकी याद आते ही पसीना भी छूट गया। कितना चालाक प्राणी है! जिस रास्ते आया उसके ठीक दूसरी तरफ तने के पीछे शिकार छिपाया। बछिया के शरीर पर कहीं कोई जख्म के निशान नहीं दिखे। यानी शिकारी दिन में किसी समय, या फिर शाम को शिकार खाने आएगा। घबराई नज़रों से इधर-उधर देखकर मैंने स्कूटर निकाला और सीधे पूना की ओर कूच किया।

तेंदुए की खबर कुछ दोस्तों को बताई। लेकिन तेंदुए को देखने के लिए कोई भी मेरे साथ आने को तैयार नहीं था। बछिया को खाते हुए उसकी तस्वीर खींचने के लिए मेरे पास उपयुक्त कैमरा नहीं था और पास जाने की हिम्मत भी नहीं थी। कोई साथ नहीं था इसलिए सोचा कि दोपहर में ही एक बार जाकर शाम होने से पहले वापस आ जाऊँगा।

एक बार फिर दूरबीन लेकर तेंदुए के बनाए रास्ते पर चल दिया। मैंने आज सुबह ही मोई

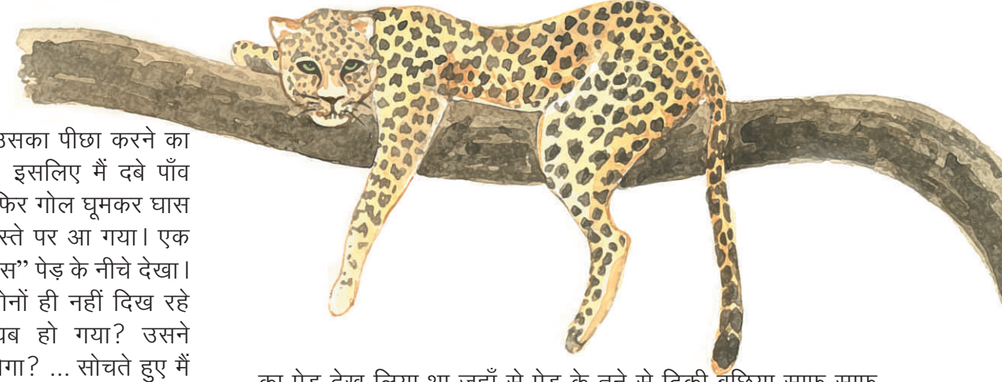

का पेड़ देख लिया था जहाँ से पेड़ के तने से टिकी बछिया साफ-साफ दिखती थी। साथ ही ज़रूरत पड़ने पर पेड़ से कूद कर भागा भी जा सकता था। मैं मोई के पेड़ पर चढ़ा और दो-तीन घण्टे रुकने की तैयारी से बैठ गया।

बछिया अभी-भी सुबह की ही अवस्था में थी। दो घण्टे गुज़र चुके थे। सूरज ढलने लगा था पर तेंदुए का कहीं अता-पता नहीं था। दिन की रोशनी में शायद तेंदुआ न आए। अँधेरा होने तक मुझे वहाँ नहीं रुकना चाहिए। यह सब सोचते-सोचते एक बार फिर मैं दूरबीन लगा कर तने को देखने लगा। मैंने देखा बछिया वहाँ नहीं थी। मैं आँखों में तेल डालकर बैठा रहा और मेरे आँखों के सामने से तेंदुआ अपने शिकार को कैसे और कहाँ ले उड़ा? पेड़ के पास से घसीटते हुए ले जाने के निशान क्यों नहीं दिख रहे हैं? वापस जाने के लिए मैं घबराकर पेड़ से नीचे उतरा। जाते-जाते आखिरी बार देखने के लिए मैं हिम्मत करके पेड़ के कुछ और पास गया। नज़दीक पहुँचकर जो देखा तो मेरी बोलती ही बन्द हो गई। उस पेड़ की डालियों के बीच बछिया की गर्दन अटकी हुई थी और बाकी शरीर झूल रहा था।

यानी मेरे सामने ही तेंदुआ उस पेड़ से नीचे आया और खींचते हुए बछिया को ऊपर की डाल पर ले गया? और यह सब उसने इस कलाकारी के साथ किया कि मुझे आहट तक न मिली। यानी मैं जब दूरबीन लगाए तेंदुए को देखने में व्यस्त था उस समय तेंदुआ मेरी हरकतों पर नज़र रखे हुए था। यह ख्याल आते ही मैं घबरा गया और पगडंडी की ओर दौड़ा। सुरक्षित दूरी पर पहुँचने के बाद मैंने कुछ थमकर साँस ली। और उस पेड़ की तरफ देखते हुए निश्चय किया कि तेंदुए को देखने के चक्कर में फिर कभी नहीं पड़ना।

अब भी सिंहगढ़ जाते समय उस चालाक तेंदुए की याद से मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

मराठी से अनुवाद - कविता और विजय झोपाटे

चित्र : दिलीप चिंचालकर